अनुच्छेद संग्रह

अनुच्छेद लेखन- परिचय

किसी भी एक वाक्य, सूक्ति या काव्य-पंक्ति के विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखना 'अनुच्छेद-लेखन' कहलाता है। एक अनुच्छेद में एक विचार या भाव का ही विस्तार किया जाता है। यह निबंध का ही छोटा स्वरूप है। निबंध के अंदर विषय पर विस्तार से लिखा जाता है। इसे दोहे, पदों, उदाहरणों इत्यादि के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इन्हीं सबको अनुच्छेद में बहुत ही संक्षेप रूप में लिखा जाता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. अनुच्छेद सीमित शब्दों में लिखा जाता है।

2. यह मूल विषय पर हीं केन्द्रित रहते हैं, अपने आप में पूर्ण रहते हैं।

3. इनमें भूमिका और निष्कर्ष देने की आवश्यकता नहीं होती है।

4. इनमें अनावश्यक प्रसंग नहीं होने चाहिए।

5. अनुच्छेदों के बीच तारतभ्य तथा क्रमबद्धता होनी चाहिए।

6. विषय का फैलाव नहीं होना चाहिए।

7. रोचकता और मन-रमाने की शक्ति होनी चाहिए।

8. विषय को 10-12 वाक्यों या 90-100 शब्दों में बाँधना चाहिए।

9. वाक्य छोटे व आपस में जुड़े होने चाहिए।

10. उदाहरणों के केवल संकेत मात्र दिए जाने चाहिए, इनका विस्तार नहीं होना चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस

संकेत बिंदु– वर्षों की गुलामी, स्वतंत्रता सैनानियों का संघर्ष, 15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद, लालकिले पर प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने झंडा रोहण, प्रधानमंत्री का भाषण, संध्या को सरकारी भवनों पर रोशनी, देशभर में समारोह का आयोजन होता है।

स्वतंत्रता प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध अधिकार है। जब हमारा देश परतंत्र था, तब न उसकी कोई साख थी न इज्जत न अपना राष्ट्रीय ध्वज न संविधान। भारत के वीर सपूतों के अथक प्रयासों से हमारा देश स्वतंत्र हुआ। 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश अंग्रेज़ी दासता से स्वतंत्र हुआ। तभी से प्रत्येक 15 अगस्त को यह

दिन स्वतंत्रता दिवस के रुप में मनाया जाता है। सर्वप्रथम हमारे देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने बड़े गौरव और उल्लास से लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और भाषण दिया और अपने देश की जय-जयकार से आकाश गूँज उठा। जिस जयकार को सुनने के लिए हज़ारों देशप्रेमियों ने अपने प्राण तक त्याग दिए थे, आज वह जयकार पूरे देश को गौरवता प्रदान कर रही थी।

तभी से आज तक सभी कार्यालयों संस्थानों आदि पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है और अवकाश रहता है। सरकार द्वारा शिक्षा, खेती, स्वास्थ्य, उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किए है। आगे भी भारत की आज़ादी बनाए रखने के लिए निरंतर प्रगति करते रहना होगा। तभी हम कह सकते हैं ---

सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ताँ हमारा

हमारे त्यौहार

संकेत बिंदु - त्योहारों का देश, तनाव मुक्ति का साधन, विभिन्न त्योहार

भारत त्योहारों का देश है यदि भारत को जानना है तो उसकी सभ्यता और संस्कृति की आत्मा के दर्शन करने हो तो इन त्योहारों को देखे और मनाए। समय की कमी मनुष्य की व्यस्तता के बाद यदि कही आनंद मिलता है तो इन्हीं त्योहारों के द्वारा। होली, दीवाली, रक्षाबंधन, दशहरा, तीज, ईद आदि अनेकों त्योहार हैं जो हमारे नीरस जीवन में सरसता का संचार करता है।

हमारे पूर्वज़ों ने अपनी व्यस्तता में से कुछ समय निकालकर अपने तनावों से मुक्ति पाने के लिए कुछ दिन ऐसे निश्चित कर दिए जिनमें घर घर में अवकाश रहे और सब मिलकर नाचकूद, हँसना हँसाना, खाना पीना सैर सपाटे आदि की जा सके।

एक कहावत है कि विधाता ने भी छ: दिनों तक सृष्टि रची और सातवें दिन आराम किया। फिर हम तो आम आदमी हैं। शायद हमारे पूर्वज चाहते थे कि पूरा परिवार या समाज मिलकर रहे मिलकर जीवन में मनोरंजन, खुशियाँ मनाएँ इसलिए इन्हें धर्म, निष्ठा और श्रद्धा से जोड़ दिया। और इसे पर्व या त्योहार कहा।

इसमें रामनवमी कृष्ण जन्माष्टमी, विजयदशमी, दीवाली, होली, क्रिसमस, पोंगल, वसंत पंचमी आदि अनेकों त्योहार हैं। अत: त्योहार हमारे जीवन में सरसता, खुशियाँ, स्फूर्ति लाते हैं। राष्ट्रीय त्योहार हो, सामाजिक हो या धार्मिक सभी नैतिकता और भाईचारे की भावना से ओतप्रोत होते हैं।

सबसे प्यारा सबसे न्यारा झंडा ऊँचा रहे हमारा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमें अपना एक झंडा मिला जो हमारी आन और शान का प्रतीक है। हमारे झंडे में तीन रंग हैं इसलिए इसे तिरंगा भी कहते हैं। पहले हमारे झंडे में तीन रंग और बीच में चरखा होता था। तीन रंग केसरिया, सफ़ेद और हरा - केसरिया वीरता की, त्याग की राह दिखाता है, सफेद रंग शांति का प्रतीक है और हरा रंग समृद्धि और हरियाली का प्रतीक है।

इस तरह हमारा देश संसार को शांति, दया और प्रेम का संदेश देता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है और

हरा रंग इसकी खुशहाली के गीत गाता है। इसके बीच में अब चरखे की जगह चक्र बना है। यह चक्र देश की प्रगति को दिखाता है। इसका रंग गहरा नीला है और इसमें चौबीस तीलियाँ हैं। यह समय को दिखाती हैं यह चक्र अशोक की लाट से लिया गया है। यह अशोक का धर्म चक्र है इसका अर्थ है - यहाँ सब धर्मों का मान किया जाता है। 22 जुलाई 1947 को इस झंडे को भारतीय संविधान में राष्ट्रीय ध्वज की मान्यता मिली थी। तिरंगा हमारे देश की शान है, इसे शत् शत् प्रणाम है।

एक रोचक यात्रा रेल द्वारा

गर्मी की छुट्टियों में दिल्ली से हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना गया। पिताजी ने रेल यात्रा का सुझाव दिया और सब मान गए इस पर उन्होंने आरक्षण करवा लिया। रेल नई दिल्ली से जाने वाली थी। हम सब बहुत उत्साहित थे क्योंकि सब एक साथ जा रहे थे सभी ने एक दिन पहले ही यात्रा की तैयारी कर ली थी। सुबह ही हम सब स्टेशन पहुँच गए और रेल का इंतजार करने लगे। पता चला कि रेल अभी दो घंटे लेट हे बहुत दुख हुआ पर स्टेशन पर घूमकर वहाँ का दृश्य देखने लगे।

यात्रियों की भागदौड़, खोमचे, दुकानों और बेचने वालों की तेज़ आवाज़ें पता ही नहीं चला कब समय बीत गया। रेल आई औह हम अपने डिब्बे में चढ़े और सीट ढूँढ़कर बैठ गए। बहुत शांति मिली। हमारी तरह गंगा स्नान करने और भी यात्री थे। जैसे ही रेल चली सभी 'हर हर गंगे' जय गंगा मैया की बोलने लगे। कुछ महिलाओं ने तो भजन कीर्तन भी शुरु कर दिया। रेल आगे बढ़ती गई और अनेक मनोरम दृश्य हमें देखने को मिले। कुछ स्टेशन पर गाड़ी रुकी भी।

कुछ यात्री चढ़े कुछ उतरे। खिड़की पर आकर चायगर्म और ठंडा आदि की गुहार लगाते बेचने वाले। इन सभी को मैं कौतुहलता से देखता रहा। बीच में हमने अपने साथ लाया खाना भी खाया। इसी कौतुहल, उत्साह और उल्लास के साथ रेल हरिद्वार पहुँच गई लहराती गंगा के दर्शन के लिए हम रेल से उतरे। धर्मशाला में सामान रखकर गंगा किनारे पहुँच गए। परंतु यह रेल यात्रा आज भी हमारे स्मृति-पटल पर ताज़ा है।

कंप्यूटर आज के युग की ज़रूरत बन गया है

आज विज्ञान ने विश्व में अद्भुत क्रांति ला दी है। विज्ञान ने मानव को सुख सुविधा तथा क्रांतिकारी उपकरण दिए हैं , जिन्हें देखकर हम अचम्भित हो जाते हैं। एक ऐसा ही अविष्कार है कंप्यूटर, जिसने हमें अनेकों सुविधाओं से संवार दिया है। कंप्यूटर को मानव मस्तिष्क कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। इसकी विशेषताओं के कारण ही आज यह हमारी ज़रुरत बन गया है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ कंप्यूटर की उपयोगिता न हो।

बैंक, रेलवे, हवाई अड्डे, दुकान, विद्यालयों, कार्यालयों, कारखानों, बिजली टेलीफोन आदि के बिल, आरक्षण, समाचार पत्रों की जानकारी आदि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ कंप्यूटर की भूमिका महत्वपूर्ण न हो। चित्रकार, वैज्ञानिक, परीक्षा परिणाम, कलाकार, अनुवाद सभी जगह इनकी उपयोगिता है। संगीत व गीतों की रिकार्डिंग में भी इसका प्रयोग होता है। कंप्यूटर पर इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है।

इस प्रकार कंप्यूटर ज्ञान विज्ञान का 'एंसाइक्लोपीडिया' बन गया है। अनेकों विज्ञापन भी कंप्यूटर द्वारा

बनाए जाते हैं। अत: आज कंप्यूटर कल्पतरु और कामधेनू के समान बन गया है। इसलिए अधिकांश विद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इसके प्रशिक्षण के लिए अनेकों संस्थाएँ होती है। अत: कंप्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

घर के सामने खड़ा एक वृक्ष

हमारा घर प्राकृतिक वातावरण से घिरा हुआ है चारों तरफ अनेक वृक्ष लगे हैं। परंतु एक वृक्ष ऐसा है जिसे मैंने शुरु से देखा है। माली नित्य आता है हर रोज़ नए पेड़ लगा जाता है। कभी बदल जाता है। परंतु घर के सामने का आम का पेड़ ज्यों का त्यों खड़ा है। यह पेड़ इतना घना है कि बहुत ही सुंदर लगता है। सुंदर ही नहीं लगता बल्कि आने जाने वालों को छाया भी देता है। गर्मी से तपते लोग इसकी छाया में ठंडक पाते हैं।

सुबह होते ही इन पर पक्षियों की चहचहाट शुरु हो जाती है। मैंने इस पेड़ को सदा हराभरा ही देखा है। मेरी माँ बताती है कि मेरे दादाजी ने अपने छोटेपन में यह पेड़ लगाया था। इससे तो इस पेड़ के लिए मेरी और श्रद्धा बढ़ जाती है। यह मुझे दादा जी जैसा ही लगता है। बसंत में इस पर बौर लग जाती है और गर्मियों में इसमें फल आ जाता है छोटी-छोटी कच्ची केरियाँ तोड़ कर खाने में बहुत अच्छा लगता है।

जब हम लोग अंदर होते हैं तो बाहर के कुछ शरारती बच्चे इस पर से फल तोड़ने लगते हैं। हमारा पूरा परिवार इसकी देखभाल करता है। हम सब इसके सुस्वादु फल खाकर प्रसन्न तो होते ही है साथ ही पड़ोसी भी इसकी सराहना करते हैं। कभी-कभी बच्चों से परेशान होकर इसे काटने की बात होती है तो मुझे बहुत बुरा लगता है। इससे छन कर आती धूप बहुत अच्छी लगती है। सबसे ज़्यादा यह प्रदूषण कम करके हमें शुद्ध वायु भी प्रदान करता है।

जीवन में खेलों का महत्व

संकेत बिंदु - आवश्यकता, अच्छा स्वास्थय महा वरदान, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क, जीवन में विश्वास तथा एकाग्रता, संघर्ष तथा सफलता।

जीवन में खेलों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इससे मनुष्य की मानसिक, आत्मिक और शारीरिक शक्तियों का विकास होता है। आज के युग में इस दूषित वातावरण में अच्छा स्वास्थय वरदान होता है। खेलकूद से शरीर स्वस्थ रहता है। मन प्रसन्न रहता है। खेल के मैदान में जाते ही शरीर में स्फूर्ति एवं उमंग से भर जाता है। खेल जीवन का एक आवश्यक अंग है। कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास संभव है। शरीर हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए खेल आवश्यक है।

खेल से जीवन में विश्वास तथा एकाग्रता का भाव पैदा करता है। खेल भावना से खेलते वक्त मनुष्य अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रित करके ही खेलता है। हर स्थिति का सामना करने की शक्ति मनुष्य के जीवन में आने वाली परिस्थिति को सुलझाने में सहायक सिद्ध होता है। खेल से प्रतिशोध की भावना नहीं रहती बल्कि सहनशक्ति को बढ़ाता है।

इस प्रकार खेल में भाग लेने से व्यक्ति जीवन संघर्ष एवं उनमें सफलता पाने की शिक्षा भी प्राप्त करता है। एकता की भावना व संघर्षशील हो जाता है। खेलते समय बौद्धिक युक्तियों और शारीरिक बल दोनों ही

लगते हैं। और इनके स्वस्थय रहने पर ही आत्मिक स्वस्थता निर्भर करता है। निष्कर्ष यह है कि खेल से मनुष्य अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रीभूत करता है। अत: खेलों का जीवन में बहुत महत्व है।

परोपकार

संकेत बिंदु - परोपकार का अर्थ, उदारवादी दृष्टिकोण, स्वार्थी मनुष्य, परोपकार का महत्व

मन, कर्म एवं वचनों से दूसरों की भलाई करना 'परोपकार' कहलाता है। परोपकारी व्यक्ति दुखियों के प्रति उदार निर्बलों के रक्षक तथा जन कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होते हैं। वे बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना से प्रेरित करती है इससे ही व्यक्ति अपने कर्तव्य पूरे करता है। परोपकार की भावना ही समाज की मनुष्यता एवं पवित्रता का आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। गुप्त जी ने भी कहा है कि मनुष्य वहीं है जो मनुष्य के लिए मरे। |

श्रीराम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, महर्षि दधीचि, राजा शिवि, महात्मागाँधी जैसे परोपकारी एवं त्यागी पुरुषों ने अपना पूरा जीवन परोपकार के लिए ही लगा दिया। वर्तमान युग में परोपकार का विशेष महत्व है आज मनुष्य स्वार्थी हो गया है वह केवल अपने लिए जीता है जिससे ईर्ष्या, द्वेष, वैर बढ़ता जा रहा है चारों ओर अविश्वास का वातावरण बना हुआ है। परोपकार से मनुष्य में त्याग एवं बलिदान की भावना का विकास होता है अत: परोपकार से ही सबका कल्याण हो सकता है। आत्मा प्रसन्न रहती है।

जगमगाते दीपों का त्योहार दीपावली

संकेत बिंदु – दीपावली, मनभावन वातावरण, मनाने का उद्देश्य, पर्व का महत्व

दीपावली का अर्थ है दीप + अवली अर्थात दीपों की पंक्ति। दीपावली प्रकाश का पर्व है। समृद्धि व खुशहाली का पर्व है। कार्तिक की अमावस्या को दीपावली का शुभ दिन आता है। इस काली रात को दीप जलाकर उजियाला करके पूर्णिमा बना दिया जाता है।

इस दिन श्रीराम तामसी ताकतों का विनाश करके चौदह वर्ष बाद अयोध्या लौटे थे। लाखों दिए जलाकर उनका स्वागत किया गया था। इस दिन श्री गणेश औऱ लक्ष्मी का पूजन भई किया जाता है। जिससे परिवार के कष्ट दूर हो व धन का आगमन हो।

इस त्योहार के आने से पूर्व घर में सफाई करके साफ सुथरा किया जाता है। कहा जाता है लक्ष्मी, सफाई से ही आती है अभाव को कूड़े करकट के रुप में फेंक दिया जाता है। फिर दीप जलाकर प्रकाश किया जाता है। यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। कहा जाता है कि खेतों की फसल कटकर घर आती है तो कृषक घर पर इस खुशी को गणेश लक्ष्मी का पूजन करते हैं और दीप जलाते हैं।

इस पर्व पर लोग बाज़ार से खरीदारी करते हैं और एक दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। कुछ लोग इसे गलत तरीके से मनाते हैं जुआ खेलते है शराब पीते है। ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि सबकी मंगल कामना करते हुए इस पर्व की गरिमा बनाए रखना चाहिए।

देश प्रेम

संकेत बिंदु - स्वाभाविक गुण, उचित विकास, देश के प्रति कर्तव्य, पवित्र उदार भाव

जो मरा नहीं भावो से बहती जिसमें रस धार नहीं,

वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

अगर हमें अपने देश के लिए प्यार नहीं तो हमारा जीवन व्यर्थ है। हमारा हृदय नहीं पत्थर है। इसी भावना से ओतप्रोत होकर वह अपना तन-मन-धन सब न्योछावर कर देता है। देश की परम्पराओं को समझना उसकी अखंडता को बनाए रखना उसके कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से कर्म करना ही देशप्रेम है। देशभक्ति एक स्वाभाविक भाव है। जिस देश में हमने जन्म लिया है वह हमारी माता के समान है। इसकी पावन मिट्टी में खेलकूद कर बड़े हुए है तो इसके लिए पवित्र प्रेम की भावना होना स्वाभाविक है।

प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य हो जाता है कि वह देश की सुख समृद्धि, विकास, रक्षा में अपना पूरा-पूरा सहयोग दे। संकट के समय तन-मन-धन से न्योछावर हो जाता है देश प्रेम के साथ विश्व प्रेम, मानव प्रेम की सीमा तक ऊपर उठे। यही सच्चे देश प्रेम की भावना है। देशभक्ति कोई संकुचित भावना नहीं है इसमें जियो और जीने दो की भावना जुड़ी रहती है।

देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर ही अनेकों वीर और वीरांगनाओं ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए। देशप्रेम मनुष्य को गौरव प्रदान करता है इसी भावना से प्रेरित होकर प्रवासी भारतीय भी देश के प्रति अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटते।

15 अगस्त

संकेत बिंदु- 15 अगस्त का भारत में महत्व, सरकार की भावी योजनाएँ, इस दिवस पर लोगों का उत्साह।

भारत के राष्ट्रीय पर्वों में '15 अगस्त' को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसी दिन 1947 में भारत आज़ाद हुआ था। भारत में 15 अगस्त पूरेउत्साह और आनंद के साथ मनाया जाता है। सरकारी भवनोंको सजाया-संवारा जाता है। इस दिन पूरे देश में राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाता है। भारत की राजधानी होने के कारण दिल्ली में तो इसकी शोभा अतुलनीय होती है। राष्ट्रपति द्वारा टी.वी. पर राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित किया जाता है। लालकिले का इस दिन विशेष महत्व होता है।

सुबह सवेरे प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' फहराते हैं। देश के राष्ट्रीय गान के मधुर स्वर के साथ तोपों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी जाती है। इसके बाद प्रधानमंत्री देश को संबोधित करते हुए भाषण देते हैं। लालकिले में विशाल जनसमूह एकत्र होता है। प्रधानमंत्री सरकार द्वारा प्रस्तावित कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा इस अवसर पर करते हैं। यह दृश्य मन को आनंदित करने वाला होता है। चारों तरफ जन सैलाब देखकर मन मंत्रमुग्ध हो जाता है।

पूरे देश के विद्यालयों में इस दिन विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है। विद्यालय में आज़ादी से ओत-प्रोत

कविताओं और भाषणों पर प्रतियोगिताएँआयोजित कराईजाती है। प्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। बच्चे एकत्र होकर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हैं। इस दिन पूरे देश में पतंगों को बड़े उत्साह से उड़ाया जाता है। आकाश में हर तरफ रंग-बिरंगी पतंगें दिखाई देती हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरा देश स्वतंत्रता पर प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हो।

कई स्थानों पर पतंग प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है। हर धर्म के लोग पतंगबाजी का आनंद लेते हैं। यह दिवस हमें सीख देता है कि अपने देश की एकता और अखण्डता को तोड़ने वाले देशद्रोहियों और दुश्मनों को मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए।

ऐतिहासिक नगरी दिल्ली

संकेत बिंदु- दिल्ली का इतिहास, दिल्ली का वर्तमान स्वरूप।

दिल्ली भारत की राजधानी है। भारत के मानचित्र में दिल के स्थान पर होने के कारण यह भारत का दिल भी कही जाती है। दिल्ली हर भारतीय के दिल में बसती है। दिल्ली ऐतिहासिक स्थानों से भरपूर है। इसके पीछे मुख्य कारण इसकी सशक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि होना है। प्राचीनकाल से ही दिल्ली कई राजाओं की राजधानी रहने का सौभाग्य प्राप्त कर चुकी है।

हिन्दु राजाओं, मुगलशासकों और अंग्रेज़ी सरकार के शासन का मुख्य केंद्र भी रही है और यही कारण है इसके अंदर हर शासन के प्रतीक चिह्न जगह-जगह दिखाई दे जाते हैं। चिड़ियाघर के समीप स्थित पांडव किला जहाँ इन्द्रपस्थ के रूप में पांचों पाडवों की याद दिलाता है, वहीं महरौली में स्थित कुतुबमीनार मुस्लिम राजाओं की बढ़ती शान का प्रतीक है।

जामा-मस्जिद, लाल-किला, हुमायूँ का मकबरा, लोधी का मकबरा, चाँदनी चौक, सफ़दरजंग एवं निज़ामुद्दीन के मकबरे आदि मुगलशासन काल की संपन्नता, सुख और समृद्धि को दर्शाते हैं। राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट, संसद भवन आदि इमारतें ब्रिटिश शासन काल के समय की गवाही देते नज़र आ जाते हैं।

ब्रिटिश शासन काल से लेकर आज तक यह निरंतर भारत की राजधानी रही है जोकि महत्वपूर्ण बात है। भारत सरकार पूरे देश की देखरेख यहीं से करती है।

नई दिल्ली दिल्ली का नवीनतम रूप है। यहाँ गगनचुंबी इमारतें इसकी भव्यता में चार चाँद लगाती हैं। दिल्ली में आधुनिकता और प्राचीनता का सुंदर रूप देखने को मिलता है। जहाँ ऐतिहासिक इमारतें विद्यमान हैं, वहीं मेट्रो इसका आधुनिक रूप प्रदर्शित करती है। सभी देशों के मुख्यालय भी यहीं पर स्थित हैं।

दिल्ली का क्नाट प्लेस, दिल्ली हाट आदि प्रसिद्ध स्थल हैं, जहाँ मौज-मस्ती की जा सकती है। दिल्ली में सभी धर्मों और संस्कृतियों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। दिल्ली इतिहास के एक-एक पन्ने को अपनी जुबानी स्वयं कहती है।

चैनलों की अधिकता फायदा या नुकसान

संकेत बिंदु- चैनलों का जीवन में महत्व, इनका इतिहास, इनकी बढ़ती लोकप्रियता, इसके दुष्परिणाम।

वर्तमान समय में टी.वी. मनोरंजन का सबसे सशक्त माध्यम है। बस बटन दबाइए देश-विदेश से जुड़ा हर कार्यक्रम आपके सामने उपस्थित हो जाएगा। कुछ दशक पीछे चले जाएँ, तो भारत में मनोरंजन के नाम पर दूरदर्शन हुआ करता था। एक समय ऐसा था कि उसकी लोकप्रियता ने पूरे भारत में अपनी सफलता के झण्डे गाड दिए थे। समय बदला और अन्य चैनलों के आगमन ने दूरदर्शन के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। आज टेलीविज़न पर अनगिनत चैनलों की भरमार है।

प्रादेशिक भाषा और विदेशों के चैनलों ने भी इस ओर आगमन आरंभ कर दिया है। टी.वी. पर आज सौ से भी ज़्यादा चैनल अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। इनकी लोकप्रियता का ही आलम है कि 80-90से अधिक चैनलों ने प्रसारण का अधिकार माँगा है। इनके अनेक लाभ हैं। यह मनोरंजन का सुलभ साधन है। दर्शकों की माँग और आवश्यकता के आधार पर कार्यक्रम दिखाए जाते हैं।

इन चैनलों के माध्यम से उत्पादों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है। खेल, राजनीति, धार्मिक, साहित्य, पाक कला तथा समाचार संबंधी चैनलों से हमें आवश्यक बातें समय-समय पर पता चल जाती हैं। डिस्कवरी जैसा ज्ञानवर्धक चैनल भी विद्यमान हैं। इन चैनलों के माध्यम से अपने आसपास के वातावरण को समझने में सहायता मिलती है। इन सबके बावजूद भी इनसे होने वाले नुकसान कम नहीं हैं।

अधिक कार्यक्रमों को देखने से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आँखें कमज़ोर हो जाती हैं। टी.वी. की पहुँच सीधे दर्शकों तक होती है। अत: इसका विपरीत प्रभाव युवाओं पर पड़ रहा है। कुछ चैनलों द्वारा कार्यक्रमों के नाम पर हिंसा, अश्लीलता और फूहड़पन को परोसा जाता है, जो युवाओं को भटका रहा है। बच्चों का मन पढ़ाई और खेल में नहीं लगता, वे लगातार टी.वी. देखते रहते हैं। इस तरह वे आलसी हो जाते हैं और शारीरिक रूप से भी पिछड़ जाते हैं।

जहाँ चाह वहाँ राह

संकेत बिंदु- कर्म का जीवन में महत्व, कर्म और इच्छाशक्ति का संबंध।

मानव जीवन में कर्म को विशेष महत्व दिया गया है। कर्म से मानव की पहचान होती है। कर्म से ही वह सफलता के शिखर पर अग्रसर होता है। यह ऐसी अद्‌भुत शक्ति है, जिससे मानव को अपार बल मिलता है। मन की शक्ति उस बल को आधार देती है। मनुष्य के अंदर अपने सपनों को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होती है परन्तु सपनों को साकार बहुत ही कम लोग कर पाते हैं। मनुष्य सपनों को पूरा करने के लिए कर्म करता है और मन उसका मार्ग प्रशस्त करता है।

असंभव को संभव मनुष्य इन दोनों के सहारे ही बना पाता है। चाहने की शक्ति से ही मनुष्य ईश्वर तक पहुँच जाता है। बालक ध्रुव ने भगवान विष्णु की गोद में बैठने की प्रबल इच्छाकर प्रण लिया और उनकी इच्छा के आगे विष्णु भगवान को भी घुटने टेकने पड़े थे। असंभव कुछ नहीं होता यदि कुछ कर दिखाने की चाह मनुष्य के ह्दय में वास करती है। महात्मा गांधी ने भारत में अपनी जड़ें जमा चुकी ब्रिटिश सरकार को

बिना हथियार के भगा दिया था। श्रीराम ने वानर सेना के दम पर लंका जैसे राक्षसी राज्य को जीत लिया था। कालिदास अपनी प्रबल चाह के कारण ही अनपढ़ से विद्वान और महान कवि बन गए। मनुष्य के अंदर यदि अपने सपनों को पाने की तीव्र इच्छा है, तो वह मार्ग में आने वाली हर कठिनाई को धूल के समान उड़ा सकता है। इच्छाशक्ति जितनी प्रबल होगी, मंजिल उतने समीप नज़र आएगी।

इस प्रकार कर्म करता हुआ मनुष्य जीवन मार्ग में सफलता प्राप्त करता है। कठिनाइयाँ मनुष्य को जीवन के संघर्ष में तपाती हैं और चाह उसके सपनों को पाने में सहायता करती है। मनुष्य कर्म और चाह के सहारे अपने सपनों को आँखों से निकालकर यथार्थ की भूमि में ला खड़ा करता है।

हताश मनुष्य अपने आत्मविश्वास, योग्यता और क्षमताओं का परिहास उड़ाता हुआ इधर-उधर घूमता रहता है। मनुष्य को चाहिए कि जीवन में असफलता मिलने पर घबराए नहीं और मंजिल पाने की चाहे को बनाए रखे। तब तक प्रयास करते रहें, जब तक राह नहीं मिल जाती है। मनुष्य की चाह ने ही रेगिस्तान में पानी के चश्मे निकाले हैं। चाँद पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। हौसला बुलंद होना चाहिए, जहाँ चाह होती है, वहाँ राह स्वयं ही निकल जाती है।

दशहरा

संकेत बिंदु- दशहरा का महत्व, दशहरा मनाने के पीछे छिपा इतिहास, त्योहार के पीछे छिपा संदेश।

दशहरे का त्योहार हिन्दू धर्म में विशेष महत्व रखता है। यह त्योहार अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की विजय और अंहकार के विनाश का प्रतीक है। इसी कारण इसे विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है। अश्विन मास के शुक्लपक्ष की दशमी के दिन इस त्योहार को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। अयोध्या के राजा राम ने इसी दिन लंकापति राक्षसराज रावण का वध किया था। प्राचीनकाल में सभी हिन्दू राजा इस दिन को शुभ मानते हुए युद्ध के लिए कूच करते थे।

यह तिथि युद्ध में जीत के लिए उत्तम मानी जाती है। उत्तर भारत में तो दशहरे का उत्साह देखते ही बनता है। दस दिन पहले से ही रामलीला का मंचन आरंभ हो जाता है। इन दिनों रामकथा को नाटक रूप में दिखाया जाता है। दसवें दिन रावण, मेघनाद और कूंभकरण के पूतलों का दहन किया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर बड़े-बड़े मेलों का आयोजन भी होता है। विद्यालयों में दस दिन का अवकाश दिया जाता है ताकि बच्चे रामलीला का आनंद उठा सकें।

बच्चे बड़े उत्साह के साथ रावण दहन देखने जाते हैं और मेलों में बहुत मौज़ करते हैं। भारत के सभी स्थानों में इसे अलग-अलग रूप में मनाया जाता है। कहीं यह दुर्गा विजय का प्रतीक स्वरूप मनाया जाता है, तो कहीं नवरात्रों के रूप में। बंगाल में दुर्गा पूजा का विशेष आयोजन किया जाता है। यह त्योहार हर्ष और उल्लास का प्रतीक है। इस दिन मनुष्य को अपने अंदर व्याप्त पाप, लोभ, मद, क्रोध, आलस्य, चोरी, अंहकार, काम, हिंसा, मोह आदि भावनाओं को समाप्त करने की प्रेरणा मिलती है।

यह दिन हमें यह भी प्रेरणा देता है कि हमें अंहकार नहीं करना चाहिए क्योंकि अंहकार के मद में डूबा हुआ एक दिन मुँह की खाता है। रावण बहुत बड़ा विद्वान और वीर व्यक्ति था परन्तु उसका अंहकार ही उसके विनाश का कारण बना। यह त्योहार जीवन को हर्ष और उल्लास से भर देता है।

परीक्षा का अंतिम दिन

संकेत बिंदु- परीक्षा का भय, परीक्षा का दिन, परीक्षा के बाद की मौज-मस्ती।

परीक्षा के नाम से ही अच्छे से अच्छा व्यक्ति भी काँप जाता है। परीक्षा के नाम से तो मुझे भी बहुत डर लगता है। परीक्षा से दो महीने पहले ही मैं तैयारियों में लग जाता था। घर से निकलना, टी.वी. देखना और खेल खेलना छोड़ देता था। सारा-सारा दिन पुस्तकों में सिर झुकाए रखता था। माता-पिताजी भी मेरे साथ परेशान रहते थे। पूरे वर्ष का प्रश्न था। ज़रा-सी चूक मेरा एक वर्ष खराब कर सकती थी।

जब तक परीक्षा होती एक-एक दिन तनाव और चिंता से भरे होते थे। परीक्षा का आखिरी दिन सभी तनाव और चिंताओं से मुक्ति का आखिरी दिन हुआ करता था। सुबह सवेरे परीक्षा देने तक मन में थोड़ी सी चिंता व्याप्त होती थी परन्तु आखिरी दिन जानकर राहत मिल जाती थी। हम सभी परीक्षा समाप्त होने का इंतज़ार किया करते थे।

जल्दी-जल्दी अंतिम प्रश्न-पत्र हल करने का प्रयास करते और परीक्षा भवन के बाहर एकत्र होना आरंभ कर देते थे। उसके बाद विभिन्न तरह के कार्यक्रम बनाते थे कि अब क्या-क्या करेंगे। कुछ कार्यक्रम तो एक दिन पहले ही बन जाते थे। एक बच्चा अपने साथ क्रिकेट खेलने का बल्ला और गेंद लेकर आता था।

वहाँ से हम समीप बने किसी मैदान में चले जाते और दो समूहों में बंटकर खेल खेलना आरंभ कर देते थे। हम क्रिकेट का भरपूर आनंद उठाते थे। परीक्षा के बाद खेलने का अपना ही मज़ा हुआ करता था। खेल समाप्त होने के बाद हम सब घूमने निकल जाते। घरवालों की तरफ से पूरी छूट हुआ करती थी। बाहर ही खाते-पीते और खूब मौज़-मस्ती किया करते थे।

उस दिन देर से घर लौटते और जमकर टी.वी. देखा करते थे। घर पर कोई भी नहीं रोकता था। पिताजी उस दिन खाने के लिए कुछ विशेष लाते थे। रात को चैन की नींद सोया करते थे। परीक्षा का दिन सबसे सुकून भरा दिन होता था। ऐसी प्रसन्नता मुझे कभी नहीं होती थी।

प्रदूषण की मार

संकेत बिंदु- ताजमहल के निर्माण कार्य का इतिहास, प्रदूषण से प्रभावित ताज की स्थिति।

ताजमहल हमारे देश का गौरव है। वैसे तो यह मुगलशासक बादशाह शाहजहाँ ने मुमताज़ महल की याद में बनवाया था। परन्तु आज सह पूरे विश्व में प्रेम की अमर कहानी के रूप में जाना जाता है। इसकी सुंदरता और भव्यता देखते ही बनती हैं। इसका निर्माण इतना भव्य है कि इसे विश्व की मुख्य धरोहरों में से प्रथम स्थान प्राप्त है। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। ताजमहल उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित है। यह मुगल वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है।

इसकी वास्तुकला में इस्लामिक, तुर्की, फ़ारसी तथा भारतीय शैली का सुंदर रूप देखने को मिलता है। इसे बनने में असंख्य मनुष्यों का परिश्रम लगा हुआ है। इसको बनने में ग्यारह साल का समय लगा। इसका निर्माण कार्य 1632 ई. में आरंभ हुआ था और 1643 में इसका निर्माण कार्य पूर्ण हुआ था। इसके वास्तुकार

उस्ताद अहमद लाहौरी माने जाते हैं। इसको बनाने में बहुत बड़ी धनराशि व्यय की गई थी। परन्तु आज यह बहुमूल्य इमारत प्रदूषण की मार झेल रही है। हमने अपनी इतनी सुंदर धरोहर को प्रदूषण से नष्ट करना आरंभ कर दिया है। प्रदूषण इसकी खूबसुरती को धूमिल कर रहा है। प्रदूषण के कारण इसका रंग काला हो रहा है। इसमें सफ़ेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

वायुमंडल में व्याप्त सभी हानिकारक गैंसे परत के रूप में संगमरमर के ऊपर जम रही हैं, जो इसके प्राकृतिक रूप को नुकसान पहुँचा रही हैं। भारतीय वैज्ञानिक ताज की खो रही सुंदरता से चिंतित हैं। कोर्ट द्वारा ताजमहल के पास स्थित सभी कारखानों को बंद करवाने के निर्देश दे दिए गए हैं।

यमुना नदी जो ताज की सुंदरता में चार चाँद लगाती है, वह भी प्रदूषण का शिकार है। यमुना का प्रदूषण और वायु में प्रदूषण की अधिकता ताजमहल पर अपना प्रभाव डाल रही है। ताजमहल के संगमरमर पर काले धब्बे देखे जा सकते हैं। अगर इसी तरह चलता रहा, तो हमारा गौरव प्रदूषण की भेंट चढ़ जाएगा। सरकार को प्रदूषण मिटाने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

विद्यार्थी जीवन

संकेत बिंदु- विद्यार्थी के जीवन में विद्यार्थीकाल का महत्व, विद्यार्थी और विद्यालय का संबंध।

विद्यार्थीकाल बहुत सुनहरा और विविध रंगों से भरा हुआ होता है। मनुष्य के जीवन में यही वह समय है, जब वह बहुत कुछ सीखता है। ये काल उसके आने वाले भविष्य का निर्धारण करता है। विद्यार्थीजीवन में शिक्षा विद्यार्थी की सहचरी होती है। इसके कारण ही वह विद्यार्थी कहलाता है। विद्यार्थी और शिक्षा एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। विद्यार्थी से यही अपेक्षा की जाती है कि वह पूरी निष्ठा और श्रद्धा से शिक्षा ग्रहण करे।

अनुशासन विद्यार्थी जीवन में विशेष महत्व रखता है यदि एक विद्यार्थी अनुशासन से युक्त जीवन जीता है, तो उसकी आधी बाधाएँ ऐसे ही समाप्त हो जाती है। अनुशासन उसके जीवन को व्यवस्थित करता है। अनुशासन से उसे समय के महत्व का ज्ञान होता है और शिक्षा अर्जित करने में सहायता भी मिलती है। विद्यार्थी जीवन हमें बताता है कि जीवन में हमारा क्या लक्ष्य है। विद्यालय के अनुशासन युक्त वातावरण में विद्यार्थी स्वयं को संयमी और उद्यमी बनाता है।

इस समय वह नए मित्र और सहपाठियों के संपर्क में आता है। इस तरह वह अपने जीवन में संबंध बनाना और सहयोग करना सीखता है। अध्यापक का मार्गदर्शन उन्हें सही दिशा प्रदान करता है। नैतिक शिक्षा और शिष्टाचार के गुणों को वह इसी समय ग्रहण करता है। इस समय वह अपनी योग्यता, क्षमताओं और गुणों का सही विकास करता है ताकि आगे चलकर एक अच्छा मनुष्य बन सके।

इसी काल में वह खेल-कूद, नृत्य, मौज़-मस्ती सब का आनंद उठाता हैं और अपने गुणों से स्वयं भी परिचित होता है। उसे अपनी क्षमताओं और योग्यताओं का भी सही प्रकार से भान हो जाता है। माता-पिता और विद्यालय द्वारा सदैव यही प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थीकाल में बच्चे का पूर्ण विकास हो। यह जीवन ज्ञान प्राप्त करने, उत्साह से जीने और प्रसन्नता से सब कुछ जानने और समझने का समय है। यह समय

एक बार गया, तो दुबारा वापस नहीं आता इसलिए अपने विद्यार्थीकाल को सही प्रकार और उत्साह से जीना चाहिए।

श्रम का महत्व

संकेत बिंदु- श्रम का महत्व, श्रम से प्राप्त बल, श्रम और सफलता का संबंध।

श्रम को सफलता की चाबी माना जाता है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ दिखाने से प्राप्त होती है। जो श्रम का महत्व जानता है और श्रम करने से कतराता नहीं है लक्ष्मी उसे वरण करने के लिए सदैव तैयार रहती है। भाग्य के भरोसे रहने वाले विफलता का स्वाद ही चखते हैं। अवसर उनके हाथ में आकर भी निकल जाता है। कठिन श्रम ही भाग्य को बनाता है। किया गया श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। वह अपना रंग अवश्य दिखाता है। श्रम का महत्व श्रम करने वाले से अधिक कोई नहीं जानता है।

श्रम के सहारे मनुष्य किसी भी प्रकार की कठिनाई को अपने मार्ग से दूर हटा देता है। श्रम का नाम आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता है। जो परिश्रमी हैं, वह आत्मनिर्भर हैं। आत्मनिर्भरता उसमें आत्मविश्वास का समावेश करती है। श्रम से बढ़ने वाला व्यक्ति चट्टान के समान होता है। उसकी सफलता दूसरों की दया और सहानुभूति पर निर्भर नहीं होती है। संसार में अन्य लोगों द्वारा उसका अनुसरण किया जाता है।

ऐसे लोग संसार में अमर हो जाते हैं। मानचित्र में जापान बहुत ही छोटा देश है परन्तु उसका लोहा पूरा विश्व मानता है। आज जापान हर क्षेत्र में अग्रणीय है। ऐसा वहाँ के लोगों के कठोर श्रम के कारण ही संभव हो पाया है। भारत जिसने कई वर्षों की गुलामी सही। उसकी अतुल धन-संपदा को लुट लिया गया परन्तु इस देश के नागरिकों ने पुन: स्वयं को विश्व के यूरोपीय देशों की कतार में ला खड़ा किया है।

श्रम अपनी कहानी स्वयं कहता है। यदि हम कहीं सफल नहीं हो पाते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि हमने पूरी तरह से श्रम नहीं किया है। विद्यार्थी जीवन में भी श्रम बहुत महत्व रखता है। यदि विद्यार्थी पढ़ने में मन नहीं लगाता है और निरंतर अभ्यास नहीं करता, तो परीक्षा में उसके हाथ असफलता ही लगती है। श्रम जितना अधिक किया होगा, सफलता का स्वाद उतना ही रसीला होगा। अत: इसके महत्व को समझते हुए श्रम को जीवन में महत्व देना चाहिए।

सांच को आंच नहीं

संकेत बिंदु- सत्य की महिमा, सत्य का प्रभाव, सत्य के सामने झूठ का प्रभाव।

सत्य से बराबर सच्चा इस संसार में कोई नहीं है। सत्य संसार का आधार है। सत्य की महिमा का बखान हर जगह किया गया है। सदा सत्य बोलो, सत्यमेव जयते और सत्यम शिवम सुंदरम पंक्तियाँ रह-रहकर सत्य की सार्थकता को प्रमाणित करती हैं। सत्य से बड़ा धर्म कोई नहीं है। सत्यवादी व्यक्ति का संसार पूजन करता है। सांच को कभी आंच नहीं आती है अर्थात इस संसार में ऐसा कोई नहीं है, जो सत्य को झूठला सके। सौ परतों में छिपाया गया सत्य भी बाहर आकर झूठ का संसार बिखेर देता है।

सत्य को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले लोग किसी का भय नहीं खाते हैं। सत्य स्वयं में एक प्रबल

शक्ति है। सांच को आंच नहीं लोकोक्ति स्वयं इस बात प्रमाण है कि इतिहास में कितने ही झूठों ने प्रयास किया होगा परन्तु सत्य को दबा नहीं पाए तभी से यह लोकोक्ति आरंभ हो गई। प्राचीन ग्रंथों में सत्य को वाणी का महत्वपूर्ण गुण कहा जाता है। एक मनुष्य की वाणी तभी सुशोभित होती है, जब वह सत्य का वरण करती है।

राजा हरिश्चंद्र, राजा राम, युधिष्ठिर और महात्मा गांधी ऐसे लोग थे, जिन्होंने सत्य को वरण किया और संसार में सदा के लिए अमर हो गए। सत्यवादी मनुष्य निर्भय होता है, डर तो झूठ बोलने वाला होता है। अपनी बात को सत्य सिद्ध करने के लिए झूठा व्यक्ति कितने भी प्रमाण खड़े कर दे परन्तु सच बोलने वाले से वह आँखें नहीं मिला सकता है।

वर्तमान युग में सच्चाई परास्त होते दिखाई देती है परन्तु यह महज़ आँखों का धोखा है। एक दिन ऐसा अवश्य आता है, जब झूठ स्वयं ही गलत साबित हो जाता है। सत्य की महिमा को देखते हुए हमें अपने जीवन में सत्य को अपनाना चाहिए। सच्चाई को झूठ की आग जला नहीं सकती है। वह अटल, अमर और निर्भय है, यही सत्य है।